Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

पौराणिक लोकगाथा 'कसैण' के 'दशौहरा' गीत में 'महाकुम्भ' सहित चतुर्युगों की विशेष घटनाओं का संकेत–एक मंथन

Kiran Kumar

Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

प्रस्तुत शोध पत्र में कुल्लू ज़िला के निरमण्ड क्षेत्र में अत्यन्त पुरातन काल से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती हुई पौराणिक लोक गाथा गायन विधा 'कसैण' के विषय में एक संक्षिप्त विचार मंथन प्रस्तुत किया गया है। शोध पत्र में 'दशौहरा' गीत कुल्लू जनपद् के निरमण्ड क्षेत्र की लुप्त प्रायः होती गाथा गायन विधा से सम्बन्धित है जो अपने आप में चतुर्युगों से सम्बन्धित अत्यन्त विशिष्ट भविष्यगामी घटनाओं को समाहित किए हुए है, वास्तव में ही एक गहन अध्ययन एवं मंथन का विषय है। प्रस्तुत् गीत के अनुसार स्वर्ग लोक से 'काशीपुरी' में एक 'कागड़ी' अर्थात् पत्रिका के गिरने का वर्णन है जो एक अलौकिक घटना प्रतीत होती है। परन्तु यदि इसके भौतिक अर्थ को ग्रहण न करके भावनात्मक पक्ष पर विचार मंथन किया जाए तो पता चलता है कि तत्कालीन आध्यात्मिक आस्था का स्तर कितना उच्च था। यहां स्वर्ग लोक से पत्रिका सर्वप्रथम काशी में आने और तत्पश्चात् अन्य पवित्र स्थानों में भेजने का सम्भावित अर्थ होगा 'ईश्वरीय संदेश का पालन' जो कि पुरातन काल से धरती पर मानव द्वारा वैदिक परम्परानुसार जीवन यापन का द्योतक है। इसी प्रकार सम्बन्धित गीत में समाहित दशौहरा, कराचा, भरांश, गरोंहणा एवं कागड़ी आदि शब्द लुप्त प्रायः होने के कारण शोध के क्षेत्र में नवीन प्रतीत होने के साथ–साथ तत्कालीन वाग्येयकारों की कवित्त्व शक्ति एवं साहित्यिक ज्ञान के उच्च स्तर को भी उजागर करते हैं।

बीज शब्दः पौराणिक लोकगाथा, कसैण, दशौहर गीत, चतुर्युग।

भूमिका

पौराणिक लोकगाथाओं का इतिहास अत्यंत पुरातन होने के कारण ये न केवल तत्कालीन मानव संस्कृति एवं जीवन पद्धति का दर्पण है अपितु कालान्तर में भावी मानव समाज के लिए भगवद्परायणता, कर्तव्यनिष्ठा, कर्मसिद्धान्त, स्वस्थ मानसिकता, कर्मठता, सतर्कता, शिक्षा एवं अनुशासित जीवन यापन हेतु आवश्यमभावी तत्वों का अक्षय स्रोत् भी रही हैं। ऐसे ही प्रेरक तत्वों से परिपूर्ण हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जनपद् के अन्तर्गत निरमण्ड क्षेत्र में गाई जाने वाली पौराणिक लोक गाथा 'कसैण' भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं से ओत–प्रोत होने के कारण अपना एक अनूठा स्थान रखती है। इस गाथा के प्रारम्भिक गीत जिसका गायन 'दशौहरा' नाम से किया जाता है, में चतुर्युगों से सम्बन्धित अत्यंत महत्वपूर्ण भावी घटनाओं यथा–सतयुग में 'दशौहरा' अर्थात् अमृत धारा, त्रेता युग में 'कराचा' अर्थात् छः मास की रात्रि, द्वापर युग में 'भरांश' अर्थात् रक्त की नदी तथा कलयुग में 'गरोंहणा' अर्थात् ग्रहण से सम्बन्धित सांकेतिक भविष्यवाणी मिलती है जो कालान्तर में सम्बन्धित युगों के आने पर सांगोपांग घटित होकर एक परम सत्य के रूप में प्रमाणित होती है। यहां शोधार्थी द्वारा उपरोक्त घटनाओं को शोधात्मक व्याख्या के आधार पर समझने हेतु एक तार्किक विचार मंथन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है परन्तु उक्त मंथन से उत्तम निष्कर्ष की प्राप्ति हेतु सम्बन्धित गीत को समझना अत्यंत आवश्यक है जो निम्नलिखित है–

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

दशौहरा

सौरगा चुड़ी कागड़ी आइ, सौरगा चुड़ी कागड़ी आइ।

सौइ गौ आइ काशूआ पूरा, सौइ गौ आइ काशूआ पूरा ।

काशूआ पूरा कागड़ी आइ, काशूआ पूरा कागड़ी आइ ।

सौइ गौ आइ कावै स्थाने, सौइ गौ आइ कावै स्थाने ।

कावे बामणु कोंठड़ै हूऐ, कावे बामणु कोंठड़ै हूऐ ।

च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ, च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ ।

तीना गौ बामणें बांच़ाड़ीं ना आइ, तीना गौ बामणें बांच़ाड़ीं ना आइ ।

कागड़ी आइ मवेले स्थाने, कागड़ी आइ मवेले स्थाने ।

मवेले बामणु कोंठड़ै हूऐ, मवेले बामणु कोंठड़ै हूए ।

च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ, च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ ।

तीना गौ बामणें बांच़ाड़ीं ना आइ, तीना गौ बामणें बांच़ाड़ीं ना आइ ।

कागड़ी आइ निरथै स्थाने, कागड़ी आइ निरथै स्थाने ।

निरथे बामणु कोंठड़ै हूऐ, निरथे बामणु कोंठड़ै हूए ।

च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ, च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ ।

तीना गौ बामणें बांचाड़ीं ना आइ, तीना गौ बामणें बांचाड़ीं ना आइ ।

कागड़ी आइ नौगरै स्थाने, कागड़ी आइ नौगरै स्थाने ।

नौगरे बामणु कोंठड़ै हूऐ, नौगरे बामणु कोंठड़ै हूए ।

च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ, च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ ।

तीना गौ बामणें बांच़ाड़ीं ना आइ, तीना गौ बामणें बांचाड़ीं ना आइ ।

कागड़ी आइ माईए (निरमण्डे) स्थाने, कागड़ी आइ माईए (निरमण्डे) स्थाने ।

निरमण्डे बामणु कोंठड़ै हूऐ, निरमण्डे बामणु कोंठड़ै हूए ।

च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ, च़ौतड़ै बेशिया बांचाड़ीं लाइ ।

साही गौ देव पौंण्डता बौडौ, साही गौ देव पौंण्डता बौडौ ।

तेउऐ कीअ कागड़ीओ बखाणा, तेउऐ कीअ कागड़ीओ बखाणा ।

सती गौ जुगै बौंहणों 'दशौहरौ', सती गौ जुगै बौंहणों 'दशौहरौ' ।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

त्रेता जुगै पौड़नों 'कराचौ', त्रेता जुगै पौड़नों 'कराचौ' ।

द्वापरा जुगै बौंहणी 'भरांशा', द्वापरा जुगै बौंहणी 'भरांशा' ।

कली गौ जुगै लागणों 'गरोंहणों', कली गौ जुगै लागणों 'गरोंहणों' ।

उक्त गीत का गायन 'दशौहरा' नाम से किया जाता है। गीत के अनुसार आकाशमार्ग द्वारा एक 'कागड़ी' अर्थात् चिट्ठी अथवा पत्र सर्वप्रथम 'काशीपुर' में गिरती है। तत्पश्चात् उसे 'काव' और 'ममेल' नामक स्थानों, जो मण्डी जनपद् के करसोग क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं, में भेजा जाता है। उसे देखकर वहां के सभी विद्वान ब्राह्मण अपने–अपने गांव के चबूतरे पर एकत्र होकर कागड़ी की लिपि को समझने का प्रयास करते हैं परन्तु कोई भी उसमें लिखे शब्दों को समझने में सफल नहीं हो पाता। तत्पश्चात् वह कागड़ी शिमला जनपद् के क्रमशः नीरथ और दत्तनगर नामक पवित्र स्थानों में पहुंचती है। उक्त स्थानों के सभी विद्वान ब्राह्मण भी अपने–अपने गांव के चबूतरे पर एकत्र होकर अपने सामर्थ्यानुसार कागड़ी को बांचने का प्रयत्न करते हैं परन्तु सफल नहीं हो पाते। अन्त में कागड़ी, माता अम्बिका के पावन स्थान 'निरमण्ड' में पहुंचती है। अन्य स्थानों के समान निरमण्ड के सभी विद्वान ब्राह्मण भी गांव के चबूतरे पर एकत्र होकर कागड़ी अर्थात् उस चिट्ठी में लिखे संदेश को पढ़ने का प्रयास करते हैं। तब निरमण्ड में उस कागड़ी का बखान 'सहदेव' नामक उच्च कोटि के विद्वान ब्राह्मण, जो ज्ञानियों में अग्रगण्य थे, के द्वारा किया गया। चिट्ठी में चार युगों में घटने वाली अति विशेष एवं अत्यन्त विचित्र घटनाओं का वर्णन किया गया था यथा–सतयुग में 'दशौहरा' बहेगा अर्थात् सागर में अमृत की धारा बहेगी, त्रेता युग में 'कराचा' पड़ेगा अर्थात् छः मास की एक रात्री होगी, द्वापर युग में 'भरांश' अर्थात् लहु की नदी बहेगी और कलयुग में 'ग्रहण' लगेगा।

उपरोक्त विवरण से हमें सम्बन्धित गीत की अन्तिम चार पंक्तियों में काशी से आई पत्रिका के अन्तर्गत चार युगों में घटित होने वाली अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़ी भविष्यवाणी प्राप्त होती है यथा –

''सती गौ जुगै बौंहणों 'दशौहरौ'

त्रेता जुगै पौड़नों 'कराचौ'

द्वापरा जुगै बौंहणी 'भरांशा'

कली गौ जुगै लागणों 'गरोंहणों'।''

इन पंक्तियों के अनुसार हमें चार युगों में घटित होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं के अन्तर्गत चार नए शब्द प्राप्त होते हैं जो निम्नलिखित हैं :

1 दशौहरा

2 कराचा

3 भरांश

4 गरोंहणा

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

दशौहरा

यह शब्द हमें लुप्त प्रायः होती निरमण्ड क्षेत्र में गाई जाने वाली पौराणिक लोक गाथा 'कसैण' के प्रारम्भिक गीत से प्राप्त होता है। वस्तुतः 'दशौहरा' शब्द 'दशधारा' शब्द का अपभ्रंश प्रतीत होता है क्योंकि निरमण्ड क्षेत्र की लोक भाषा में किसी देवप्रतिमा, शिवलिंग, भगवान सूर्य को अर्घ्य चढ़ाने अथवा पुष्प आदि किसी भी वस्तु पर जल की धारा चढ़ाने के लिए 'जलौहरा' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ होता है 'जलधारा'। इसी प्रकार यह सम्भव है कि कालान्तर में दस जलधाराओं के लिए दश + जलौहरा = दशौहरा कहा जाने लगा होगा।

यहां विशेष रूप से विचारणीय बिन्दु यह है कि लोक गाथा कसैण के अनुसार उपरोक्त गीत की पंक्ति 'सती गौ जुगै बौंहणों 'दशौहरौ' अर्थात् सतयुग में अमृत की धारा बहेगी, से 'महाकुम्भ' पर्व के स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं अर्थात् चयनित गाथा का यह आरम्भिक शब्द वास्तव में महाकुम्भ का ही पर्याय है। यद्यपि लोक गाथा कसैण भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं अर्थात् द्वापर युग की घटनाओं से प्रेरित है तथापि सतयुग से लेकर चतुर्युगों की अति विशिष्ट घटनाओं से सम्बन्धित भविष्यवाणी को अपने आप में समाहित किए यह गीत सतयुग के आरम्भिक चरण अर्थात् श्री मद्भागवत् पुराण में वर्णित समुद्र मंथन से भी पुरातन प्रमाणित होता है। दूसरा प्रमाण यह है कि सम्बन्धित गाथा के दूसरे गीत में मथुरा के तत्कालीन महाराजा उग्रसेन की महारानी द्वारा 'दशौहरा स्नान' हेतु संग चलने के आग्रह का वर्णन है जो कि महाकुम्भ की ओर संकेत करता है। महाकुम्भ हिन्दु धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व है जहां करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु भक्त एवं साधु समुदाय कुम्भ पर्व स्थल प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में मोक्ष प्राप्ति हेतु स्नान करते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि महाकुम्भ को दशौहरा क्यों कहा गया? इसका उत्तर दशौहरा शब्द के अर्थ अर्थात् दशधारा में ही छुपा है। तात्पर्य यह है कि चयनित गाथानुसार कुम्भ में श्रद्धालुओं को कुम्भ पर्व स्थल पर जाकर दस अमृतमयी जलधाराओं द्वारा स्नान करना अर्थात् जल धारा में दस बार डुबकी लगाना आवश्यक था।

यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि दस धाराओं द्वारा ही स्नान अथवा जल धारा में दस डुबकी लगाना क्यों आवश्यक है ? मानव शरीर में नौ दृश्य छिद्र होने के कारण ग्रन्थों में इसे नौ द्वारों से युक्त पुरी अथवा अयोध्या की संज्ञा दी गई है यथा –

> ''अष्टा चक्रा नवद्वारादेवानां पूरयोध्या।
>
> तस्यां हिरण्ययः कोष स्वर्गोज्योतिषावृतः।।'' अथर्य 31 ।।

शास्त्रों के अनुसार मानव शरीर में दो आंख, दो कान, नाभि तथा एक मुख को मिलाकर सिर में ही सात द्वार होते हैं। इसके अतिरिक्त आठवां गुदा द्वार और नौवां मूत्र द्वार सहित पंचतत्त्वों से रचित नौ द्वारों से युक्त यह मानव देह ब्रह्मपुरी, बह्मलोक, द्वारावती और अयोध्या आदि संज्ञाओं से सुशोभित होकर आत्मा के ठहरने का उत्तम स्थान बन जाती है। श्री मद्भागवत् गीता आदि धार्मिक गन्थों में उपरोक्त नौ द्वारों के अतिरिक्त 'ब्रह्मरन्ध्र' नामक दसवें अदृश्य द्वार अथवा छिद्र का भी वर्णन होने के कारण मानव देह दस द्वारों से युक्त मानी गई है। कदाचित् इन्हीं दस द्वारों के पूर्ण शुद्धिकरण द्वारा देह के नकारात्मक तत्त्वों के निष्कासन हेतु ही कुम्भ स्नान अथवा तत्कालीन 'दशौहरा स्नान' (कसैण के सन्दर्भ में) के अन्तर्गत कुम्भ पर्व स्थल में जाकर दस बार डुबकी लगाना तार्किक दृष्टि से सुसंगत प्रमाणित होता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

सर्वविदित है कि देश–विदेश के कोने–कोने से कुम्भ स्नान हेतु आने वाले श्रद्धालु मात्र कलेवर शुद्धि हेतु नहीं अपितु पाप मुक्ति, देह के अन्तर्कोषों की शुद्धि, आध्यात्मिक उन्नति एवं देहावसानोपरान्त मोक्ष प्राप्ति हेतु कुम्भ पर्व स्थल में आकर स्नान करते हैं।

कराचा

चयनित विषय कसैण के अन्तर्गत दशौहरा गीत के अध्ययन से प्राप्त यह दूसरा शब्द है जो कि नवीन होने के साथ–साथ तनिक जिज्ञासा बढ़ाने वाला भी प्रतीत होता है, अपने आप में एक मंथन का विषय है। यदि इसका विन्यास अथवा सन्धि विच्छेद किया जाए तो यह क + राचा = कराचा बनता है। यह शब्द चयनित शोध क्षेत्र निरमण्ड की लोक भाषा का अत्यन्त प्राचीन शब्द है जो अब लुप्त प्रायः हो गया है। निरमण्ड क्षेत्र की लोकभाषा में 'रात्रि' को 'राच' कहा जाता है जो अभी भी चलन में है और इसमें 'क' उपसर्ग जोड़ देने से यह 'कराच' बनता है। वास्तव में राच शब्द निर्गुणात्मक अथवा भावशून्य है परन्तु 'क' उपसर्ग जोड़ देने से वह नकारात्मक भाव युक्त बन जाता है अर्थात् ऐसी रात्री जो सामान्य नहीं अपितु नकारात्मक प्रभावों से युक्त क्रूर अथवा अप्रिय क्षणों से युक्त है। कराचा इस कराच शब्द का ही बहुवचन रूप है अर्थात् कई अप्रिय क्षणों एवं घटनाओं से युक्त रात्रियों से मिलकर बना एक वृहद् कालखण्ड।

दशौहरा गीत के अन्तर्गत कराचा शब्द का प्रयोग त्रेता युग के रामायण काल के सन्दर्भ में हुआ है जिसका सीधा सम्बन्ध अयोध्या के तत्कालीन राजा भगवान श्री रामचन्द्र से है। रावण वध के उपरान्त अयोध्या में रामराज्य की स्थापना हुई और प्रजा हर प्रकार से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगी परन्तु एक दुष्ट धोबी के अपनी पत्नी के प्रति संशयात्मक दृष्टिकोण एवं चरित्रहीनता के मिथ्यारोप के कारण श्री रामचन्द्र को एक आदर्श राजा के कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए, मर्यादा एवं लोकमत की रक्षा हेतु अपनी अद्धांगिनी लक्ष्मी स्वरूपा सीता का परित्याग करना पड़ा। उनके वियोग का प्रभाव इतना गहरा था कि बाह्य संसार से मोह भंग होने के कारण श्री राम ने अपने आप को छः मास तक एक कक्ष तक ही सीमित कर दिया। लोक रामायण के अनुसार श्री राम के बाहर न निकलने के कारण अयोध्या में छः मास तक रात्री ही रही अर्थात् सूर्योदय नहीं हुआ। यद्यपि अयोध्या के विषय में यह बात सुनने में तार्किक दृष्टि से असंगत प्रतीत होती है तथापि पृथ्वी के विषय में इस बात को पूणतः नकारा भी नहीं जा सकता। क्योंकि पृथ्वी पर आईसलैंड, फिनलैंड, अलास्का और नार्वे जैसे देश भी हैं जहां भौगोलिक स्थिति और ध्रुवीय दिशान्तर के कारण कई मास तक सूर्यास्त नहीं होता।

यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि अयोध्या की ध्रुवीय स्थिति सामान्य होने पर भी वहां 'कराचा' अर्थात् छः मास की रात्रि कैसे संभव है? इस पर गहन विचार मंथन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लोक रामायण में अयोध्या के विषय में 'कराचा' शब्द के शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा इसका भावनात्मक अर्थ अधिक प्रबल है, क्योंकि अयोध्या की प्रजा अपने सूर्यवंशी राजा श्री रामचन्द्र के प्रति अपने असीमित प्रेम और समर्पण भाव के कारण उनको ही अयोध्या का सूर्य मानती थी और उनके श्री मुख के दर्शन को ही सूर्योदय मानकर अपने दैनिक क्रियाक्लापों का आरम्भ करते थे। सम्भवतः छः मास तक श्री राम के दर्शन न होने के कारण ही अयोध्या की प्रजा ने छः मास के इस अन्तराल को अप्रिय क्षणों वाली रात्रि अर्थात् 'कराचा' की संज्ञा दी होगी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भरांश

दशौहरा गीत में समाहित तीसरी भविष्यवाणी का द्योतक यह शब्द द्वापर युग से सम्बन्धित है जिसका अर्थ है–लहु की नदी। जब भगवान श्री कृष्ण ''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमर्धमस्य तदात्मानाम् सृजाम्यहम् ।।''1 को चरितार्थ करते हुए इस वसुन्धरा पर अवतरित हुए तो उन्हें धर्म के पुनरोत्थान हेतु कंस, ज़रासन्ध, पौण्ड्रक, बाणासुर, शिशुपाल आदि अनगिनत दुष्ट क्षत्रियों और असुरों का नाश करने के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कई भीषण युद्ध लड़ने पड़े जिसमें महाभारत का युद्ध द्वापर युग का सर्वाधिक रक्तपात लाने वाला अत्यंत भीषण युद्ध था। यद्यपि इस युद्ध में श्री कृष्ण ने किसी भी प्रकार के आयुध का प्रयोग नहीं किया तथापि इस युद्ध की प्रत्येक गतिविधि, वास्तविक नियंत्रण एवं अंतिम परिणाम उनके ही हाथ में था। कदाचित् 'भरांश' शब्द का प्रयोग महाभारत के सन्दर्भ में ही हुआ होगा क्योंकि इस युद्ध में सर्वाधिक संख्या में वीरों का लहु इस धरा पर प्रवाहित होते हुए एक विभत्स रूप वाली रक्त की नदी का रूप ले चुका था।

गरोंहणा

''भौतिक विज्ञान की दृष्टि से जब सूर्य व पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाता है तो चन्द्रमा के पीछे सूर्य का बिम्ब कुछ समय के लिए ढक जाता है, इसी घटना को सूर्य ग्रहण कहा जाता है। चन्द्रग्रहण उस खगोलीय स्थिति को कहते हैं जब चन्द्रमा पृथ्वी के ठीक पीछे उसकी प्रच्छाया में आ जाता है।''[2] ऐसा तभी हो सकता है जब सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा इस क्रम में लगभग एक सीधी रेखा में अवस्थित हों।

एक प्राचीन पौराणिक कथा के अनुसार ग्रहण का सीधा सम्बन्ध सतयुग के आरम्भिक चरण की घटना 'समुद्र मंथन' से है। मोहिनी रूप भगवान विष्णु के द्वारा मंथन से प्राप्त अमृत के वितरण के समय 'राहु' नामक दैत्य, देवता का रूप धरकर देवताओं की पंक्ति में बैठ गया और छल पूर्वक अमृत पान कर लिया। उसकी इस कुटिल चाल का अनावरण सूर्य और चन्द्रदेव के द्वारा किया गया जिसके फलस्वरूप भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र द्वारा असुर का सिर काट दिया परन्तु अमृत पान करने के कारण देह के दो भागों में विभाजित होने पर भी असुर का वध नहीं हो सका । असुर के कटे हुए सिर को 'राहु' एवं धड़ को 'केतु' की संज्ञा दी गई।

''जब ग्रहण का प्रारम्भ हो रहा हो, तो उस समय से पहले ही स्नान–जप अर्थात् संकल्पादि कर ले, मध्यकाल में होम , देवपूजा, पाठ और ग्रहण का मोक्ष समीप होने पर दान तथा पूर्ण मोक्ष होने पर पुनः स्नान करना चाहिए यथा–

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुरार्चनम्।

मुच्यमाने सदा दानं विभुक्तौ स्नानमाचरेत्।।''[3](धर्मसिन्धु)

'देवीभागवत्' में आता है कि भूकंप एवं ग्रहण के अवसर पर पृथ्वी को खोदना नहीं चाहिए।यहां दशौहरा गीत की चौथी भविष्यवाणी 'कली गौ जुगै लागणों गरोंहणों' अर्थात् कलियुग में ग्रहण लगेगा, तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती, क्योंकि ग्रहण का सम्बन्ध मात्र कलियुग से न होकर चारों युगों से है। इसका तार्किक दृष्टि से चिन्तन करने पर

1 श्री मद्भागवत् गीता, चतुर्थ अध्याय, श्लोक–7
2 hi.m.wikipedia.org
3 धर्मसिन्धु (पंचागदिवाकर, विवेक शर्मा, जनरल बुक डिपो, होशियार पुर, जालन्धर)

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 01, June 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कदाचित् ग्रहण काल के नकारात्मक प्रभावों के कारण ही ग्रहण का विशेष सम्बन्ध कलियुग से जोड़ दिया गया होगा। यहां प्रश्न उठता है कि ग्रहण के विशेष नकारात्मक प्रभाव मात्र कलियुग में ही क्यों होंगे? शास्त्रों के अध्ययन से हमें प्रत्येक युग के कालक्रम अथवा संरचना में धर्म एवं अधर्म से सम्बन्धित चार चरणों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है जिसके अनुसार क्रमशः सतयुग में धर्म के चारों चरण, त्रेतायुग में धर्म के तीन चरण एवं अधर्म का एक चरण, द्वापर युग में धर्म के दो तथा अधर्म के भी दो चरण और अन्त में कलियुग में धर्म का एक चरण और अधर्म के तीन चरण हैं।

उपरोक्त् अध्ययन के उपरान्त हम यह भलिभान्ति समझ सकते हैं कि कलियुग में धर्म का एक चरण और अधर्म के तीन चरण होने के कारण ही इस काल में नकारात्मक शक्तियों का विशेष प्रभाव संभव है और कदाचित् इसी तथ्य को आधार बनाकर चयनित विषय से सम्बन्धित दशौहरा गीत में ग्रहण का सम्बन्ध विशेष रूप से कलियुग से जोड़ा गया है।

संदर्भ

श्री मद्भागवत् गीता
देवी भागवत्
पंचांगदिवाकर, विवेक शर्मा, संस्करण 2020–2021
धर्मसिन्धु, काशीनाथ उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी

साक्षात्कार

श्री परमानन्द और श्री धर्मानन्द, गांव जयदानी पीपल डा0 व तहसील निरमण्ड जिला कुल्लू (हि0प्र0) 2020
श्री रतन दास, गांव सतांगीधार डा0 व तहसील निरमण्ड जिला कुल्लू (हि0प्र0) 2020